ऐस्ट्रोस्टूडैंट्स ग्रुप (चंडीगढ़)

द्वारा प्रस्तुत

लाल किताब – तीसरा हिस्सा (1941) में प्रयुक्त उर्दू, फ़ारसी व पंजाबी के मुहावरों/लोकोक्तियों के सरलार्थ

सादर व सप्रेम समर्पित

आचार्य श्री मनेश्वर सिंह कौंडल जी

एवं

आचार्य श्री राजीव के० खट्टर जी

को



आचार्य
श्री मनेश्वर सिंह कौंडल जी



आचार्य
श्री राजीव के० खट्टर जी

सफ़ा नम्बर

हर जा के रूद क़दम शरीफ़ा, न फ़ज़ल रबीहशुद न ख़रीफ़ा। 39

यह मुहावरा ऐसे मनहूस आदमी के लिये प्रयोग किया जाता है जिसके पाँव जहाँ भी पड़ते हैं, सब चौपट और बर्बाद हो जाता है।

हाथ पुराने खौंसड़े, मिट्टीमल जी आये। 39

हाथ पुराने खौंसड़े–हाथ में पुराने जूते, **मिट्टीमल जी आये**–श्री मिट्टीमल जी (किसी व्यक्ति का नाम) लौट आये।

जब कोई व्यक्ति किसी कार्य में असफल होकर वापिस लौट आये, तो इस मुहावरे का प्रयोग किया जाता है।

माँ पर धी, पिता पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा। 42

ऐसी मान्यता है कि बेटी पर माता का, और बेटे पर पिता का थोड़ा–बहुत प्रभाव अवश्य होता है।

लोग गये जो मेला बैसाखी, लालाजी जकड़े घर की राखी 45

ऐसे व्यक्ति की व्यथा जो स्वयं तो घर परिवार की ज़िम्मेवारियों में व्यस्त रहे और उसका परिवार मौज–मस्ती में मग्न रहे।

भाई जी तुसाँ जम्मदे क्यों न मर गये, ... थान फाड़ने पये। 45–46

पंजाबी भाषा की यह लोकोक्ति पूर्ण रूप में इस प्रकार है:

भाई जी तुसाँ जम्मदे क्यों न मर गये,

हट्टी बहणा प्या, थान फाड़ने पये।

निकम्मे भाइयों से दु:खी एक ऐसे व्यक्ति के मन की व्यथा का वर्णन है जहाँ कि वह कहने पर मजबूर हो जाता है , **भाई जी तुसाँ जम्मदे क्यों न मर गये**–भाई, तुम पैदा होते ही क्यों न मर गये, **हट्टी बहणा प्या**– दुकान पर बैठना पड़ा, **थान फाड़ने पये**–और कपड़े के गट्ठर फाड़ने पड़े अर्थात् काम करना पड़ा।

ब्राह्मण की बोदी मींह मंगदी। 46

ब्राह्मण की बोदी – ब्राह्मण की शिखा, **मींह मंगदी** – वर्षा माँगे।

पंजाबी भाषा की यह लोकोक्ति, उमस भरी भीषण गर्मी, और वर्षा के अभाव से परेशान लोगों की व्यथा का वर्णन करती है।

मर मर के बुढ़िया राग गावे, लोग कहें उसे ब्याह। 50

यह कहावत उस समय प्रयोग की जाती है जब लोग किसी के दु:ख का मज़ाक उड़ाने लगते हैं।

जन्म वक़्त थे लाख हज़ारी, बोलते-बोलते हूँझ बुहारी 64

जन्म वक़्त थे लाख हज़ारी = जन्म के समय धनाढ्य थे,

बोलते-बोलते = देखते ही देखते

हूँझ बुहारी = झाड़ू फिर जाना

अर्थात् जन्म के समय तो धनाढ्य थे लेकिन बाद में देखते ही देखते सब कुछ सफ़ाचट हो गया।

चंद चढ़्या कुल आलम देखे 76

चंद चढ़्या = निकला हुआ चाँद

कुल = सारा

आलम देखे = दुनिया देखे

अर्थात् बदनामी और प्रसिद्धी कभी छुपाये नहीं छुपती।

पिदरम सुल्तान बूद, ... 91

पूरा वाक्य इस प्रकार है:

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना,
था ख़्वाब में ही देखा या हो गया दीवाना,
सुलतान बूद पिदरम इक़बाल था शाहाना,
तक़्सीर उनकी अज़्म या हो गया बहाना,
है याद करके रोता, घर उजड़े हों दीवाना,
जाहिल बना वही जो था माहिर-ए-ज़माना।

(लाल किताब, 1952 - सफ़ा नम्बर 421)

चंदर ख़ाना नम्बर 12 की मन्दी हालत के समय टेवे वाला यह कहता है कि मुझे गुज़रा हुआ ज़माना याद आता है, शायद मैंने उसे सपने में ही देखा था या फिर यह मेरा पागलपन है, मेरा बाप बादशाह था और उनकी हरेक ठाठ-बाठ, शान-ओ-शौक़त और इज़्ज़त राजाओं के समान थी। न जाने क्या हुआ शायद कोई ग़लती हो गई या कोई और बहाना बन गया कि उनका बहुत ही बुरा हो गया, जिसके कारण उस समय के ऐश्वर्य को याद करके रोता हूँ, घर उजड़ कर वीरान हो गये हैं, और जो किसी समय दुनिया के विशेषज्ञ हुआ करता था, आज बेवकूफ और नालायक बन गया है।

आवा ही ऊत जाना 99

आवा=ईंट पकाने का भट्ठा, **ऊत जाना =** नष्ट हो जाना

संपूर्ण तंत्र का भ्रष्ट हो जाना।

आप ते डूबी डूमणी, नाल प्रभ भी गाले 100

आप ते डूबी डूमणी- डोमनी ख़ुद तो डूबी ही

नाल प्रभ भी गाले - अपने यजमान को भी साथ ले डूबी।

यह मुहावरा उस समय प्रयोग किया जाता है जब किसी निकृष्ट व्यक्ति के कुकृत की वजह से किसी सज्जन व्यक्ति पर भी आँच आये।

लल्लू करे कवल्लियाँ, रब्ब सिध्धियाँ पावे। 100

लल्लू - भोला, **करे कवल्लियाँ** - बिना सोचे समझे काम करे, **रब्ब सिध्धियाँ पावे -**भगवान नेक फल दे।

अर्थात् निर्मल हृदय से किये हुये कार्य का भगवान नेक फल ज़रूर देता है।

चोरां टोली, एको बोली 102

चोराँ टोली = चोरों का दल

एको बोली = समान भाषा

अर्थात् एक समान सोचने वालों की भाषा भी एक समान ही हुआ करती है।

कीले बाँधी गाँ, न हूँ न हाँ। 102

कीले बाँधी गाँ - खूंटे से बंधी हुई गाय, **न हूँ न हाँ -** निष्चल व चुपचाप।

अर्थात् पतिवर्ता एवं नेक स्त्री।

इक दूनी दूनी का चक्कर 117

अर्थात् भाग्य का कुचक्र।

खाना पीना लाह, सुथरे दम का क्या बसाह 118

खाना पीना लाह – पेट भरने में ही भलाई है

सुथरे दम का क्या बसाह – वर्ना ज़िंदगी का क्या भरोसा।

ऐसे बेफ़िक्र और गैर ज़िम्मेवार व्यक्ति का ज़िक्र है जिसे कि भविष्य की कोई चिंता नहीं है।

इस मुहावरे में सुथरा नामक एक स्वच्छंद और भिक्षा पर निर्वाह करने वाली एक प्रजाति का वर्णन किया गया है जोकि केवल वर्तमान में ही विश्वास करती है। किंवदंती है कि यह प्रजाति बेहद बेफ़िक्र और भविष्य के प्रति लापरवाह है। कहा जाता है कि यह लोग एक रोटी खाने के बाद ही दूसरी रोटी पकाते हैं, इनकी मान्यता है कि दूसरी रोटी तब ही बनाई जाये जब वे पहली रोटी खा चुके हैं, क्या जाने थाली में पड़ी रोटी उनके भाग्य में है या नहीं।

शिव शम्भू, ढा कोठे, तू ला तम्बू 122

यहाँ एक ऐसे बेफ़िक्र और ग़ैर ज़िम्मेवार व्यक्ति का वर्णन किया गया है जोकि बसे बसाये घर को उजाड़ कर तम्बू या किसी अस्थाई निवास पर रहने की इच्छा मन में रखता हो।

लसूड़े की गिटग का सा हाल। 147/252

ऐसी स्थिति जब किसी चीज़ या मनुष्य से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाये।

चमगादड़ के मेहमान आये जहाँ हम लटकें, वहाँ तुम लटका 147

वह स्थिति जहाँ मेहमानों को मेज़बानों की तरह ही रहने पर मजबूर होना पड़े।

कुत्ता राज बैठाल्या, मुड़ चक्की चट्टण जावे 200

कुत्ता राज बैठाल्या – कुत्ते को सिंहासन पर बिठाया

मुड़ = पुनः/दोबारा

चक्की चट्टण जावे = चक्की चाटने जाये।
अर्थात् किसी निम्न स्तरीय व्यक्ति को भले ही शासक क्यों न बना दिया जाये मगर वो फिर भी अपने घटिया आदतों से बाज़ नहीं आता।

नंगों के मेहमान ...... भूके सोये 227

पूरी कहावत निम्नलिखित अनुसार है जो कि स्वयं में ही अपना उत्तर है:

नंगों के मेहमान आये हंस हंसाकर भूके सोये

उक्खल पुत्त न जम्मदा, धी अंधी अच्छी 229

उक्खल पुत्त = मंदबुद्धि/पागल पुत्र
न जम्मदा = न पैदा होता
धी = पुत्री/बेटी
अंधी अच्छी = अंधी बेहतर
अर्थात् एक पागल या मंदबुद्धि पुत्र से अंधी बेटी बेहतर होती है।

हमाँ याराँ दोज़ख़, हमाँ याराँ बहिश्त। 232

दु:ख-सुख में साथी।

ठूठे पड़ा ख़ैर 245

भिक्षा पात्र में पड़ी भिक्षा अर्थात् दान में मिली हुई चीज़ ।

आर ढाँगा, पार ढाँगा, ... चल्लीआँ 252

पंजाबी भाषा की यह प्रसिद्ध लोकोक्ति पूर्ण रूप में निम्नलिखित अनुसार है:

आर ढाँगा, पार ढाँगा, बिच्च टल्लम-टल्लीआँ,
आण कूँजाँ, देण बच्चे, नदी न्हावण चल्लीआँ।

आर ढाँगा, पार ढाँगा- इस तरफ़ भी डंडा, उस तरफ़ भी डंडा।
बिच्च टल्लम-टल्लीआँ- और बीच में घंटियाँ।
आण कूँजाँ देण बच्चे-क्रौंच पक्षी के झुंड आते हैं, बच्चे देते हैं।
नदी न्हावण चल्लीआँ- और फिर से नदी में स्नान करने चल पड़ते हैं।
इस लोकोक्ति में रहट (जिसे पंजाबी भाषा में हल्ट कहा जाता है) का वर्णन किया

गया है। **आर ढाँगा, पार ढाँगा** अर्थात् दोनों तरफ़ की लोहे की छड़ों(Shaft), **बिच्च टल्लम-टल्लीआँ** अर्थात् इसके धुरे से आती आवाज़, **आण कूँजाँ** इसके कुएँ से पानी भर कर लाने वाले डिब्बों को कहा गया है, **देण बच्चे** उस पानी के लिये कहा गया है जोकि इन डिब्बों द्वारा भर कर बाहर सिंचाई के लिये छोड़ा जाता है, **नदी न्हावण चल्लीआँ** से अभिप्राय वह प्रक्रिया है जब पानी छोड़ने के बाद डिब्बे पुनः पानी भरने के लिये कुएँ के अन्दर जाते हैं।

गुलगुले की बारिश हर रोज़ न होगी **264**

क़िस्मत इंसान पर हमेशा ही मेहरबान नहीं रहती या चमत्कार हर रोज़ नहीं हुआ करते।

ऐसे जम्मे चंदरभाण, चुल्हे आग न मंजे बाण। **274**

ऐसा इंसान जिसके पैदा होते ही घर में भुखमरी आ जाये और न ही कोई ऐश्वर्य बाकी रहे।

रब्ब बनाई जोड़ी, एक अन्धा दूसरा कोढ़ी। **290**

ऐसे दो मनुष्य जो कि अवगुणों में एक दूसरे से बढ़कर हों।

तीसरा रल्या, तो घर गल्या। **299**

यह मुहावरा वहाँ प्रयोग होता है जब कोई तीसरा मनुष्य आकर पहले दो की योजनाओं को चौपट कर दे।

सपुर्दम बतो माये ख़्वेशरा. . . . . . . बेशरा। **302**

पूरी कहावत इस प्रकार है:

सपुर्दम बतो माये ख़्वेशरा,
तू दानी हिसाबे कमो बेशरा।

सपुर्दम बतो माये ख़्वेशरा अर्थात् मेरा सब कुछ तेरे अर्पण है
तू दानी हिसाबे कमो बेशरा कमी बेशी के निर्णायक तुम है।

अर्थात् हे परमात्मा मैंने अपना सब कुछ तेरे अर्पण कर दिया है, अब आगे ऊँच-नीच, लाभ-हानि का निर्णय तेरे हाथ है।

मिर्ज़ा हल्का, सारंगी भारी। **335**

यह मुहावरा उस समय प्रयोग होता है जब पति बेहद पतला और कमज़ोर हो, और पत्नी हद से ज़्यादा भारी।

कुत्ते को घी हज़म नहीं होता। **337**

अर्थात् किसी भी निकृष्ट व्यक्ति को कोई श्रेष्ठ वस्तु देना उस वस्तु का अपमान ही होता है।

धन्ने भगत की गऊआँ राम चरावे **357**

यह मुहावरा उस भोले भाले और अनाड़ी व्यक्ति के लिये प्रयोग किया जाता है जिसके सब काम प्रभु-कृपा से ही पूर्ण होते चले जाते हैं।



किसी भी अन्य जानकारी और सुझाव के लिये संपर्क करें -

निर्मल भारद्वाज nkbhardwaj@gmail.com, nirbhar@gmail.com

योगराज प्रभाकर yr_prabhakar@yahoo.com, yrprabhakar@gmail.com